प्रथम अध्याय
विषय-प्रवेश

1.1 व्याकरण-शास्त्र : परिचय और स्वरूप

मनुष्य अपने विचारों को दूसरों तक भाषा के माध्यम से ही सम्प्रेषित करता है। भाषा के अपने कुछ नियम होते हैं जिनका परिचय व्याकरणशास्त्र से प्राप्त किया जा सकता है।

भारतीय वाङ्मय के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि व्याकरणशास्त्र को योगदान करने वाले अनेक आचार्य हुए हैं जिनमें ब्रह्मा, बृहस्पति, इन्द्र, भरद्वाज आदि की सुदीर्घ परम्परा रही है।

1.2 व्याकरण का उद्भव एवं परम्परा :

व्याकरणशास्त्र के उद्भव के विषय में ठीक-ठीक बता पाना तो अत्यधिक कठिन कार्य है, परन्तु इतना निश्चित है कि व्याकरण का सूत्रपात वैदिक युग में हो चुका था। यद्यपि वैदिक काल का कोई भी प्रामाणिक व्याकरण-ग्रन्थ सम्प्रति उपलब्ध नहीं है, तथापि ब्राह्मण ग्रंथों आरण्यकों तथा उपनिषदों में इस प्रकार के संकेत प्राप्त होते हैं कि उस समय के विचारक व्याकरण के पारिभाषिक शब्दों से परिचित थे। कुछ विद्वानों का मानना है कि व्याकरणशास्त्र की उत्पत्ति दैवी है, परन्तु यह मान्यता अधिक प्रामाणिक नहीं रही।

ब्रह्मा :

भारतीय इतिहास में सब विद्याओं का आदि प्रवक्ता ब्रह्मा को माना गया है। ऐसा माना जाता है कि 'शिक्षा' वेदाङ्ग का भी प्रवचन सर्वप्रथम ब्रह्मा ने ही किया था। ऋक्ततन्त्र में विद्या की

परम्परा का उल्लेख करते हुए कहा गया है – 'ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्रमिन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्यः, ऋषयो ब्राह्मणेभ्यः'[1]। अर्थात् सर्वप्रथम ब्रह्मा ने बृहस्पति को अक्षर-समाम्नाय का उपदेश किया, तत्पश्चात् बृहस्पति ने इन्द्र को, इन्द्र ने भरद्वाज को, भरद्वाज ने ऋषियों को और ऋषियों ने ब्राह्मणों को। वर्णमाला को ही अक्षर-समाम्नाय कहतें हैं। वर्णमाला 'शिक्षा' वेदाङ्ग का प्रमुख अंग है।

ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मा ने 22 शास्त्रों का प्रवचन किया था। अक्षर-समाम्नाय आदि 'शिक्षा' वेदाङ्ग विषयों को भी व्याकरणशास्त्र में ही स्वीकार किया जाता है, जिस प्रकार पाणिनि मुनि ने अपने शब्दानुशासन के प्रारम्भ में अक्षर-समाम्नाय का उपदेश किया है।

बृहस्पति :

ऋक्ततन्त्र के अनुसार 'शिक्षा' वेदाङ्ग के द्वितीय प्रवक्ता बृहस्पति हैं। इनके पिता का नाम अंगिरा था, अतः इनको आंगिरस भी कहते हैं। 'बृहस्पति वै देवाना पुराहितः[2]' के अनुसार ये देवों के पुरोहित थे। महाभारत में इन्हें वेदांगों का प्रवक्ता भी बताया गया है।[3]

पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने प्राचीन वाङ्मय में उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि बृहस्पति सामगान, अर्थशास्त्र,

---

1. ऋक्ततन्त्र, 1.4
2. ऐतरेय ब्राह्मण, 8.26
3. महाभारत, शान्तिपर्व, 112.32

इतिहास, शिक्षा आदि छह वेदाङ्ग, व्याकरण, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र और अगदतन्त्र के प्रवक्ता थे।[1]

इन्द्र :

महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं – 'बृहस्पतिन्द्रिय दिव्यं वर्षसहस्त्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपरायणं प्रोवाच।[2] इससे विदित होता है कि बृहस्पति ने इन्द्र को प्रतिपदपाठ पद्धति से पदों का उपदेश किया था। इन्द्र बृहस्पति के शिष्य थे। उन्होंने बृहस्पति से पदपाठ-पद्धति से वर्षों तक अध्ययन किया था। इन्द्र के पिता का नाम कश्यप प्रजापति और माता का नाम अदिति था। अदिति दक्ष प्रजापति की पुत्री थी। इन्द्र के 11 सहोदर भाई थे जिनके नाम क्रमशः धाता, अर्यमा, मित्र, वरूण, अंशुमान, भग, विवस्वान्, पूषा, पर्जन्य, त्वष्टा और विष्णु हैं। ये अदिति के पुत्र होने से 'आदित्य' कहलाते हैं। इन्द्र के पाँच आचार्य थे। इनके नाम है – प्रजापति, बृहस्पति, अश्विनीकुमार, यम और कौशिक। इन्द्र के अनेक शिष्य थे। ऐसा माना जाता है कि इन्द्र ने विश्वामित्र को यज्ञ विद्या और अध्यात्म विद्या, भरद्वाज को आयुर्वेद, धन्वन्तरि को शल्य-चिकित्सा, कश्यप, वशिष्ठ, अत्रि और भृगु को आयुर्वेद पढ़ाया था।

---

1. शिक्षा वेदाङ्ग परम्परा और सिद्धान्त, पृ० 7
2. व्याकरण महाभाष्य, 1.1.1

भारद्वाज :

इनके पिता का नाम बृहस्पति था जो देवों के आचार्य थे। इनके पितामह का नमा अंगिरा था। 'एकविंशति भारद्वाजम्' से विदित होता है कि भरद्वाज के 21 पुत्र थे।

महर्षि भारद्वाज की आयु के विषय में पं० युधिष्ठिर मीमांसक लिखते हैं कि 'भारत युद्ध के समय द्रोण 400 वर्ष का था। इससे कम से कम 200 वर्ष पूर्व द्रुपद उत्पन्न हुआ था। महाभारत में द्रुपद को 'राज्ञां बृद्धतमः' कहा गया है।

संस्कृत-वाङ्मय में उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर मीमांसक जी ने यह सिद्ध किया है कि महर्षि भरद्वाज ने आयुर्वेद, धनुर्वेद, पुराण, राजशास्त्र, धर्मशास्त्र और 'शिक्षा' वेदाङ्ग का प्रचलन किया था।[1]

महाभारत के अनुसार इन्द्र ब्राह्मण का पुत्र था किन्तु देवासुर संग्रामों क अध्यक्ष होने से क्षत्रिय बन गया। 'तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार भरद्वाज इन्द्र का प्रिय शिष्य था।[2] इन्द्र ने स्वयं 300 वर्षों तक उसको वेद-विद्या का उपदेश दिया था। भरद्वाज भी प्रत्येक आयु में ब्रह्मचर्यपूर्वक वेद विद्या के अध्ययन की कामना करता रहा।

भारद्वाज :

भरद्वाज के मूल पुरुष का नाम भरद्वाज है, जो इन्द्र के शिष्य और अनेक ऋषियों के प्राचार्य थे। भरद्वाज नाम से अनेक आचार्य हुए है। महर्षि भरद्वाज ने अनेक ऋषियों को पढ़ाया था, उनके शिष्य

---

1. काशिका वृत्ति, 2.1.9 तथा 2.4.84
2. म० भा०, शा० प० 22.11

ही भारद्वाज कहलाए। प्रश्नोपनिषद में सुकेशा भारद्वाज का उल्लेख हैं।[1] बृहदारण्यकोपनिषद् में गर्दभीविपीत भारद्वाज का उल्लेख मिलता है।[2] पाणिनीय व्याकरण में भी भारद्वाज[3] का वर्णन मिलता है।

इससे विदित होता है कि भारद्वाज ने व्याकरण शास्त्र का प्रवचन किया था।[4] जिस भारद्वाज का पाणिनीय व्याकरण में उल्लेख मिलता है उसके विषय में पं० युधिष्ठिर मीमांसक लिखते हैं - हमारे विचार में यह भारद्वाज दीर्घजीवितम, अनूचातम, वैयाकरण भारद्वाज बार्हस्पत्य का पुत्र द्रोण भारद्वाज है। द्रोणाचार्य की आयु भारत युद्ध के समय 400 वर्ष की थी। ऐसा महाभारत में स्पष्ट उल्लेख मिलता है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी भारद्वाज का साक्षात् उल्लेख होने से निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह विक्रम से 300 वर्ष प्राचीन है।[5]

याज्ञवल्क्य :

अनेक आचार्य महर्षि याज्ञवल्क्य और शिक्षाकार याज्ञवल्क्य को एक ही व्यक्ति मानते है। यदि यह सत्य है तो बृहदारण्योकोपनिषद् के अनुसार महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को ब्रह्मविषयक उपदेश देकर वैराग्य उत्पन्न किया था। उन्होंने जनक की सभा में उषस्त चाक्रायण को आत्मा का स्वरूप बतलाया था कि वह नित्य,

---

1. तैत्तिरीय ब्राह्मण, 30.10-11
2. प्रश्नोपनिषद, 6.1
3. बृहदारण्यकोपनिषद, 4.1.5
4. अष्टाध्यायी, 7.2.63 : ऋतो भारद्वाजस्य।
5. संस्कृत व्याकरण - शास्त्र का इतिहास, भाग-1, पृ० 157

चेतन और अमर है। पुत्रैषणा, लोकैषणा का त्याग, आत्म स्वरूप में अवस्थिति और वैराग्यधारणपूर्वक ब्रह्मप्राप्ति का प्रवचन किया था। जनक की सभा में महाविदुषी गार्गी के विज्ञानविषयक प्रश्नों का विज्ञान विषयक समाधान किया था। आरुणि उद्दालक को गन्धर्व का वास्तविक रहस्य समझाया था। अभिमानी विदिग्ध शाकल्य के देवताविषयक प्रश्नों का समाधान करके उसके अभिमान का संहार किया था और उसे नतमस्तक बनाया था। राजा जनक की भी मानवविषयक जिज्ञासा को शान्त किया था। अभिप्राय यह है कि महर्षि याज्ञवल्क्य महान् तत्त्ववेता और ब्रह्मज्ञानी विद्वान् थे।

चन्द्रगोमी :

कल्हण की राजतरंगिणी और भर्तृहरि की वाक्यपदीय के अनुसार आचार्य चन्द्रगोमी ने महाराज अभिमन्यु के आदेश से व्याकरण महाभाष्य का पुनरुद्धार किया था। इन्होंने पाणिनीय व्याकरण और महाभाष्य के आधार पर एक व्याकरणशास्त्र की भी रचना की थी। पाणिनीय शिक्षा सूत्रों के आधार पर आचार्य चन्द्रगोमी ने 'वर्ण-सूत्र' लिखे, जो जर्मनी से प्रकाशित चान्द्र व्याकरण के अन्त में रोमन अक्षरों में छपे हैं।

गौत्तम :

महाभाष्यकार पतञ्जलि ने गौत्तम को पाणिनि मुनि और व्याडि के साथ स्मरण किया है। आपिशलि आदि तीनों ही महान् वैयाकरण हैं। अतः इनके साथ स्मरण किया गया गौत्तम भी महान् वैयाकरण

माना जाता है।[1] आचार्य गौत्तम के नाम से एक 'गौत्तमी शिक्षा' आजकल उपलब्ध होती है जो काशी से प्रकाशित 'शिक्षा-संग्रह' में छपी है।

चारायण:

'चारायण' पद अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय 'फक्' के योग से निष्पन्न है (चरणस्यापत्य चारायण:)। इस प्रकार इनके पिता का नाम 'चर' ज्ञात होता है। पाणिनीय गणपाठ के नडादिगण में 'चर' का उल्लेख मिलता है जो पाणिनि मुनि से पूर्ववर्ती होने का संकेत करता है।

आचार्य चारायण के स्थितिकाल के विषय में पं० युधिष्ठिर मीमांसक लिखते है - 'चारायण कृष्ण यजुर्वेद की चारायणीय शाखा का प्रवक्ता है।वैदिक शाखाओं का अन्तिम प्रवचन भारत युद्ध के समय हुआ था। अत: इनका समय विक्रम से लगभग 3100 वर्ष पूर्व है।[2]

मण्डूक:

मण्डूक ऋषि के नाम से एक 'माण्डूकी शिक्षा' उपलब्ध होती है। पाणिनि मुनि की अष्टाध्यायी में मण्डूक ऋषि का उल्लेख मिलता है इनके अनुसार मण्डूक ऋषि की सन्तान 'माण्डूकेय' कहलाती है।

ऐतरेय-आरण्यक[3] तथा ऋक्तप्रातिशारण्यै में मण्डूक ऋषि के पुत्र माण्डूकेय के मत की चर्चा मिलती है। मण्डूक ऋषि का पाणिनीय

---

1. म० भा०, 6.2.36
2. ऐतरेय आरण्यक, 3.1.4
3. ऋ० प्रा०, 200

व्याकरण में उल्लेख होने से स्पष्ट है कि वह पाणिनि मुनि से निःसंदेह प्राचीन है। ऐतरेय आरण्यक में मण्डूक ऋषि के पुत्र माण्डूकेय के मत का उल्लेख होने से यह सिद्ध होता है कि माण्डूकेय ऐतरेय-ब्राह्मण से भी प्राचीन है।

अर्थवेदीय माण्डूकी शिक्षा सन् 1921 ई० में दयानन्द महाविद्यालय लाहौर से प्रकाशित हुई थी जिसका सम्पादन पं० भगवद्दत्त ने अनेकों हस्तलेखों के आधार पर किया था।

गालवः

पाणिनि मुनि ने अपने व्याकरणशास्त्र में आचार्य गालव के मत का तीन स्थानों[1] पर उल्लेख किया है। इससे विदित होता है कि आचार्य गालव ने किसी व्याकरणशास्त्र की रचना की थी।

महाभारत में पाञ्चाल गालव को क्रमपाठ और 'शिक्षा' वेदाङ्ग का प्रवक्ता बतलाया गया है।[2] महाभारत के इस उल्लेख से प्रकट होता है कि आचार्य गालव बाभ्रव्य गोत्रीय थे और पाञ्चाल देश के निवासी थे। महाभारत में उल्लेख होने से यह विदित होता है कि इनका स्थिति-काल प्रायः विक्रम से 5000 वर्ष पूर्व है।

आपिशलिः

'आपिशलि' शब्द अपत्यार्थक प्रत्यय 'इञ्' (इ) के योग से निष्पन्न है। अतः इनके पिता का नाम 'आपिशल' था। पाणिनि के गणपाठ में 'आपिशलि' पद का पाठ है जिससे 'आपिशल्या'[3] रूप

---

1. अष्टा०, 63.61; 71.74; 7.3.99
2. म० भा०, शा० प०, 103-104
3. गणपाठ, 4.1.80

बनता है। इस लेख से विदित होता है कि इनकी बहन का नाम 'आपिशल्या' था।

'आपिशलि' पद पाणिनीय गणपाठ के परिशिष्ट के अन्तर्गत छात्र्यादिगण[1] में भी पढ़ा गया है। 'शाला' उत्तरपद होने पर 'आपिशलि' पद को अनुदात्त स्वर का विधान किया गया है।[2] यह विधान एक आपिशलि की शाला की ओर संकेत कर रहा है। यहाँ 'शाला' पद का अर्थ 'पाठशाला' है। पाणिनीय व्याकरण में इनका उल्लेख होने से विदित होता है कि पाणिनि मुनि के समय में आचार्य आपिशलि की पाठशाला बहुत प्रसिद्ध रही होगी।

शिवः

महाभारत से यह तथ्य प्रकट होता है कि शिव ने शिक्षा आदि छह वेदाङ्गों को वेद से उद्धृत करके प्रकाशित किया था।[3] श्लोकात्मक पाणिनीय शिक्षा में यह लिखा है कि पाणिनि मुनि ने शिव से अक्षर-समाम्नाय को प्राप्त करके समस्त व्याकरणशास्त्र का प्रवचन किया था।[4] इस लेख के आधार पर पाणिनि के 14 सूत्र 'माहेश्वर सूत्र' कहलाते हैं। शिव की माता का नाम 'प्रजापति कश्यप' था। शिव के दस सहोदर भाई थे। शिव इनमें ज्येष्ठ थे। भारतीय इतिहास में ये 11 रूद्र थे।

---

1. The Ganāpatha Ascribed to Panini, Appendices, p. 256
2. अष्टा०, 6.2.86 : छात्र्यादय : शालायाम्।
3. म० भा०, शा० प० 284-92
4. येनाक्षरसमाग्नायमधिगम्य महेश्वरात्
   कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः॥ पाणिनीयशिक्षा, श्लोक 57

भारतीय इतिहास में ब्रह्मा के साथ-साथ शिव को भी अनेक विद्याओं का प्रवर्तक माना जाता है।[1] उन्होंने शिक्षा आदि अनेक शास्त्रों का प्रवचन किया था। उनके अनेक शिष्य थे। नन्दी उनका प्रियतम शिष्य और सेवक था। शिव ने योगज बल और रसायन विद्या से मृत्यु को जीत लिया था, इसलिये वे 'मृत्युञ्जय' कहलाते थे।

पाणिनि :

संस्कृत साहित्य में पाणिनि मुनि के पाणिन्, पाणिनि, शालङ्कि, शालातुरीय, पणिपुत्र और आहिक नाम उपलब्ध होते हैं। श्लोकात्मक पाणिनीयशिक्षा में 'पाणिनि' तथा 'दाक्षीपुत्र' नामों का भी उल्लेख मिलता है।[2] इससे विदित होता है कि पाणिनि की माता का नाम 'दाक्षी' था।

संग्रहकार व्याडि का एक नाम 'दाक्षायण' है।[3] 'दाक्षि' और 'दाक्षायण' ये दोनों ही नाम व्याडि के है। इससे प्रकट होता है कि संग्रहकार व्याडि पाणिनि की माता का भाई था। पाणिनि के नाना जी का नाम 'व्यड' था। व्यड का पुत्र ही 'व्याडि' कहलाया । कथासरित्सागर के अनुसार पाणिनि के आचार्य का नाम 'वर्ष' था। वर्ष का एक छोटा भाई उपवर्ष था। महाभाष्य के अनुसार 'कौत्स' पाणिनि का शिष्य था।[4]

---

1. म॰ भा॰, शा॰ प॰, 142-47
2. पा॰ शि॰, श्लोक 40
3. व्या॰ म॰ भा॰, 2.3.66
4. तदेव, 3.3.108

'शलातुर' नाम ग्रामः, सोऽभिजनोऽस्यास्तीति शालातुरीयः, तत्रभवान् पाणिनिः' - गणरत्नमहोदधि के इस वचन से सिद्ध होता है कि 'शालातुर' नामक ग्राम पाणिनि का अभिजन था।[1]

पंचतन्त्र के एक श्लोक[2] से ज्ञात होता है कि सिंह ने पाणिनि मुनि के प्राणों क हरण किया था। इनके छोटे भाई का नाम पिंगल था।पिंगल को समुद्र तट पर एक मगरमच्छ ने निगल लिया था।[3] व्याकरण-सम्प्रदाय में ऐसी मान्तया है कि पाणिनि मुनि का स्वर्गवास त्रयोदशी को हुआ था। इसलिए आज भी पाणिनीय वैयाकरण लोग त्रयोदशी को अष्टाध्यायी का पाठ नहीं करते हैं।

पं० युधिष्ठिर मीमांसक के अनुसार पाणिनि का स्थितिकाल महाभारत युद्ध के 200 या 300 पश्चात् का है। इससे अधिक बाद का इन्हें नहीं कहा जा सकता। पाणिनि मुनि ने 'शिक्षा' वेदाङ्ग के अतिरिक्त अष्टाध्यायी, धातुपाठ, गणपाठ और लिङ्गानुशासन की भी रचना की थी। 'जाम्बवतीविजय' (पातालविजय) नामक काव्य भी पाणिनि को ही कृति माना जाता है।

पाणिनि ने वर्णों के शुद्ध उच्चारण के लिए एक सूत्रात्मक 'शिक्षा' नामक ग्रंथ की रचना की थी। जिसके अनेक सूत्र व्याकरण-ग्रंथों में उपलब्ध होते हैं। इस सूत्रात्मक 'शिक्षा' ग्रंथ पर आधारित एक श्लोकात्मक 'पाणिनीयशिक्षा' की भी रचना हुई।

---

1. व्या० म० भा०, 1.4.1
2. पञ्चतन्त्र, मित्रसम्प्राप्ति, 36: सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान पाणिनेः।
3. तदेव, 36 : छन्दोज्ञाननिधिं जघान मकरो वेलातटे पिंगलम्।

कात्यायनः

'कात्य' पद गोत्र-प्रत्ययान्त है और कात्यायन पद युव-प्रत्ययान्त है। पूज्य व्यक्ति के सम्मान के लिए युव-प्रत्ययान्त शब्द का प्रयोग किया जाता है। कात्य एवं कात्यायन नाम से इतना स्पष्ट है कि उनके मूल पुरुष का नाम 'कत' था। भारतीय इतिहास में अनेक कात्यायन हैं। एक वैयाकरण कात्यायन ने पाणिनीय व्याकरण पर वार्तिक पाठ लिखा है, जो कि व्याकरण का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। इसके बिना पाणिनीय व्याकरण को सर्वाङ्पूर्ण नहीं कहा जा सकता। कात्यायन के वार्तिकपाठ के आधार पर पतञ्जलि मुनि ने व्याकरणशास्त्र के आकर ग्रन्थ 'महाभाष्य' की रचना की है। आज कात्यायन के नाम से एक 'कात्यायनी' नामक ग्रंथ भी उपलब्ध है, जिसमें मुख्य रूप से स्वरित स्वर के विषय में विचार किया गया है। यह कहना कठिन है कि इस शिक्षा के प्रणेता तथा वार्तिककार कात्यायन एक ही व्यक्ति है अथवा पृथक्-पृथक्।

वार्तिककार कात्यायन के काल के विषय में पं० युधिष्ठिर मीमांसक का कथन है - वार्तिककार कात्यायन याज्ञवल्क्य का पौत्र हो तो वार्तिककार पाणिनि से कुछ उत्तरवर्ती होगा। यदि वह पाणिनि का साक्षात् शिष्य हो तो वह पाणिनि का समकालिक होगा। अत: वार्तिककार कात्यायन का काल विक्रम से प्राय: 2900-3000 वर्ष पूर्व है।'[1]

---

1. संस्कृत व्याकरण-शास्त्र का इतिहास, पृ० 289-90

वसिष्ठ :

इनके नाम से 'वासिष्ठी शिक्षा' उपलब्ध होती है, जिसमें यजुर्मन्त्रों का विश्लेषण किया गया है। 'यजुविधान शिक्षा' में भी वसिष्ठ को ससम्मान स्मरण किया गया है।[1]

पाराशरः

इनके नाम से एक 'पाराशरी शिक्षा' नामक ग्रंथ मिलता है। इस शिक्षा से संकेत मिलता है कि पाराशर ने किसी शिक्षा ग्रंथ की रचना की थी। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार पाराशर ने भिक्षुसूत्रों का प्रणयन किया था, जो 'पाराशर्य'[2] कहलाते थे।

माण्डव्यः

माण्डव्य के नाम से एक शिक्षा प्राप्त होती है, जिसके अन्तः साक्ष्य से स्पष्ट है कि यह ग्रंथ माण्डव्य नामक किसी कोविद ने रचा था। इस माण्डव्य का संहिता-ग्रंथों का पदकार होने का संकेत मिलता है और किसी शिक्षा ग्रंथ की रचना की भी सूचना मिलती है।

उमरेशः

उमरेश ने प्रातिशाख्य ग्रंथों के आधार पर 'वर्णरत्नप्रदीपिका' नामक एक शिक्षा ग्रन्थ की रचना की है जिसमें वर्णों के स्थान आदि विषयों पर विचार किया गया है।

---

1. वसिष्ठादिभिरनुष्ठितमनुव्याख्यास्यामः।
   यजुर्विधान शिक्षा, आरम्भ-वाक्य
2. अष्टा०, 4.3.110

केशव:

केशव ने 'प्रतिज्ञासूत्र' ग्रन्थ के आधार पर 'केशवी शिक्षा' नामक ग्रंथ का प्रणयन किया है।

मल्लशर्म :

मल्लशर्म ने अपने नाम से एक शिक्षा ग्रंथ लिखा है जिसमें उन्होंने अपना संक्षिप्त परिचय भी दिया है। इस शिक्षा ग्रंथ में हस्तस्वरप्रक्रिया आदि विषयों पर विचार किया गया है।

जयन्तस्वामी :

जयन्तस्वामी 'रघुवंश' नामक शिक्षा के प्रणेता हैं। कुछ लोग इस शिक्षा को रावणकृत मानते हैं। हो सकता है कि जयन्त स्वामी का ही उपनाम 'रावण' हो। इस शिक्षा में प्रचय स्वर आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

रामकृष्ण :

रामकृष्ण की 'षोडशश्लोकी शिक्षा' नामक एक रचना उपलब्ध है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इसमें 16 श्लोक हैं जिनमें 63 वर्णों पर विचार किया गया है।

अनन्तदेव:

'अवसाननिर्णय' नामक शिक्षा अनन्तदेव की रचना है। यह यजुर्वेदीय शिक्षा है। इसमें यजुर्वेद-संहिता के अवसानों का निर्णय किया गया है। स्वराष्टक शिक्षा के रचयिता भी अनन्तदेव है। अनन्तदेव और अनन्त एक ही व्यक्ति हैं या भिन्न-भिन्न यह कुछ नहीं कहा जा सकता।

बालकृष्ण :

'प्रातिशाख्यप्रदीप' नामक शिक्षा बालकृष्ण की कृत्ति है। इन्होंने स्वयम् उक्त शिक्षा के प्रारम्भ में अपना परिचय दिया है। इस शिक्षा ग्रंथ में वेदाध्ययन के प्रकार आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इनकी यह कृति प्रातिशाख्य ग्रंथों पर आधारित है।

रामचन्द्र :

रामचन्द्र ने 'वेदपरिभाषा' नामक शिक्षा ग्रंथ लिखा है। इनके पिता का नाम सिद्धधेश्वर था। इस शिक्षा ग्रंथ में मन्त्र-पदों की संख्या के लिए विचित्र परिभाषाएँ दी गई हैं।

शम्भुमिश्र :

शम्भुमिश्र 'क्रमावसानकारिका' नामक शिक्षा ग्रंथ के रचयिता हैं जो याज्ञवल्क्य के शिष्य कात्यायन मुनि के प्रति अत्यन्त शक्तिमान हैं। इनके शिक्षा ग्रंथों में यजुर्मन्त्रों के क्रमावसानों का निर्णय किया गया है।

नारद :

नारद अपने नाम से 'नारदीयशिक्षा' की रचना की है। संस्कृत-साहित्य में गान विद्या सम्बन्धी नारद-संहिता का भी उल्लेख मिलता है। उक्त शिक्षा गान विद्या के षड्ज स्वर आदि कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार किया गया है । भट्टशोभाकर नाम के पण्डित ने भी विचार किया है ।

लोमशः

लोमश के नाम से एक 'लोमशी शिक्षा' शिक्षा-संग्रह में संगृहीत है। यह शिक्षा सामवेदीय है। पं० युगल किशोर ने सन् 1949 विक्रमी में इसे शिक्षा-संग्रह में अंकित किया है।

1.3 पाणिनि : संक्षिप्त परिचय :

'त्रिकाण्डशेष' में पाणिनि के छः नाम पाये जाते है - पाणिन्, आहिक, दाक्षीपुत्र, शालङ्कि, पाणिनि और शालातुरीय। इनमें पाणिन और पाणिनि दोनों गोत्र नाम हैं।[1] 'आहिक' पाणिनि का मूल नाम है, किन्तु प्रसिद्धि गोत्र नाम पाणिनि से ही हुई है। भाष्यकार पतञ्जलि भी महाभाष्य के प्रथम अन्हिक में इसी नाम से स्मरण करते है - "कथं पुनरिदं भगवतः पाणिनेराचार्यस्य लक्षणं प्रवृत्तम्" एक अन्य स्थान पर भाष्यकार पाणिनि को दाक्षीपुत्र नाम से भी पुकारते है- "सर्वे सर्वपदादेशा दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः"[2] शालङ्कि नाम से विदित होता है कि इनके पिता का नाम शालङ्क था। शालातुरीय नाम अभिजनहेतुक है, गणरत्न महोदधि में यह नाम पाणिनि के लिए प्रयुक्त हुआ है - 'शालातुरीयस्तत्रभवान् पाणिनिः'[3] पाणिनि के पिता का नाम पाणिन् और माता का नाम दाक्षी था। संग्रहकार व्याडि का नाम एक स्थान पर दाक्षायण मिलता है, इससे सिद्ध होता है कि व्याडि पाणिनि का ममेरा भाई था।

---

1. मध्यसिद्धान्तकौमुदी, पृ० 8
2. पतञ्जलि महाभाष्य, 1.1.20
3. गणरत्न महोदधि प्रथम पृ०

उनके जीवन की समाप्ति के संबंध में किवदन्ती है कि एक शेर ने उनके प्राणों का हरण किया था – "सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिने:"[1]

1.3.1 पाणिनि का काल :

भगवान् पाणिनि के काल का निश्चित ज्ञान प्राप्त करने के लिए कोई स्पष्ट प्रमाण तो उपलब्ध नहीं है परन्तु अनुमान के आधार पर विचारक कुछ निर्णय करते हैं, और यह निर्णय भी सबका एक जैसा नहीं है। कुछ पाश्चात्य तथा तदनुयायी भारतीय विद्वान् पाणिनि का जन्म गौत्तम बुद्ध से बाद मानते है। वे प्रमाणरूप में यह सूत्र उद्धृत करते हैं –"कुमार: श्रमणादिभि:"। उनका कहना है कि श्रमण शब्द बौद्ध भिक्षुओं के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, इससे पूर्व इस शब्द का प्रयोग इस अर्थ में नहीं हुआ। इसलिए बौद्ध मत प्रचार के अनन्तर ही पाणिनि को माना जा सकता है। जब कि बुद्ध का समय ईसवी पूर्व छठी शताब्दी है तो लगभग दो सौ वर्ष बाद अर्थात् ईसवी पूर्व चौथी शताब्दी पाणिनि का समय माना जा सकता है।[2]

1.3.2 पाणिनि की कृतियाँ :

पाणिनि की रचनाओं में अष्टाध्यायी या पाणिनीयाष्टक का प्रमुख स्थान है। यह ग्रंथ संस्कृत भाषा का अनुपम रत्न है। विश्व की किसी भाषा में इसके जोड़ का व्याकरण नहीं बना। इसमें आठ अध्याय, प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। तथा समस्त ग्रंथ में 3995

---

1. पञ्चतन्त्र, मित्रसम्प्राप्ति – 36
2. म० सि० कौ०, पृ० 10

सूत्र हैं। पाणिनि ने इस लघुकाय ग्रंथ में संस्कृत जैसी विस्तृत भाषा का पूर्णतया विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

उणादि सूत्रों को भी पाणिनि की रचना बताया गया है। इसी प्रकार पाणिनीय शिक्षा तथा लिङ्गानुशासन नामक लघुग्रंथों को भी पाणिनि की रचना मानना विवादस्पद ही है। इसके अतिरिक्त पाणिनि ने पातालविजय या जाम्बवती-विजय नामक एक महाकाव्य की रचना की थी, जो आज उपलब्ध नहीं है।

1.4 भट्टोजिदीक्षित : संक्षिप्त परिचय

भट्टोजिदीक्षित का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम लक्ष्मीधरभट्ट था। शेषकृष्ण इनके गुरु थे। इनके पुत्र का नाम भानुजिदीक्षित और पौत्र का नाम हरिदीक्षित था।

1.4.1 भट्टोजिदीक्षित का काल :

डॉ॰ वेलवेल्कर के अनुसार भट्टोजिदीक्षित का जन्म ई॰ सन् 1630 में हुआ था।[1] अन्य ऐतिहासिक विद्वान् इनका जन्म काल वि॰ सं॰ 1637 मानते हैं।[2]

शेषकृष्ण-विरचित 'प्रक्रियाकौमुदी' की व्याख्या का वि॰ सं॰ 1514 का एक हस्तलेख मिलता है। विट्ठल-विरचित 'प्रक्रियाप्रसादटीका' का वि॰ सं॰ 1536 का एक हस्तलेख भी उपलब्ध है। हो सकता है शेषकृण के जीवित रहते हुए भी किन्हीं कारणों से विट्ठल ने उनके पुत्र विश्वेश्वर से अध्ययन किया हो, साथ ही यह

---

1. Systems of Sanskrit Grammar, p. 39
2. म॰ सि॰ कौ॰, पृ॰ 21

भी संभव है कि शेषकृष्ण चिरंजीवी रहे हो और उनके अन्तिम काल में भट्टोजिदीक्षित ने शिष्यत्व ग्रहण किया हो।[1]

1.4.2 भट्टोजिदीक्षित की कृतियाँ :

भट्टोजिदीक्षित ने पाणिनीय सूत्रों की क्रम अनुसार व्याख्या न करके प्रक्रिया अर्थात् सुबन्त आदि पदों की सिद्धि-प्रक्रिया के अनुसार 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' की रचना की थी। इस ग्रंथ पर उन्होंने 'प्रौढमनोरमा' नाम्नी टीका भी लिखी थी। दीक्षित जी के अतिरिक्त सिद्धान्तकौमुदी के टीकाकार रहे हैं तद्यथा - ज्ञानेन्द्र सरस्वती ने सिद्धान्तकौमुदी पर 'तत्त्वबोधिनी' तथा वासुदेव दीक्षित ने 'बालमनोरमा' नाम्नी टीका रामानन्द ने 'तत्वदीपिका' कृष्णमिश्र ने 'रत्नार्णव' टीका तथा रामचन्द्र ने केवल 'स्वरप्रक्रिया' अंश पर टीका लिखी है। परन्तु इन सब टीकाओं में भट्टोजिदीक्षित की 'प्रौढमनोरमा' सबसे महत्त्वपूर्ण है।[2] भट्टोजिदीक्षित ने पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्रक्रमानुसार 'शब्दकौस्तुभ' नामक ग्रंथ भी लिखा था। इस ग्रंथ में उन्होंने सूत्र-व्याख्या के अतिरिक्त महाभाष्य के आधार पर व्याकरण दर्शन के विभिन्न सिद्धान्तों का विवेचन दिया है। यह ग्रंथ पूर्ण रूप में उपलब्ध नहीं होता।

1.4.3 संस्कृत व्याकरण को भट्टोजिदीक्षित का योगदान :

पाणिनीय व्याकरण में भट्टोजिदीक्षित का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पाणिनि व्याकरण पर उनका ऐसा अनूठा प्रभाव पड़ा है कि

---

1. द्र० - मीमांसक, युधिष्ठिर:, संस्कृत व्या० शा० का० इति०, पृ० 178
2. द्र० - सं० व्या० शा० का० इति०, पृ० 201

महाभाष्य का महत्त्व भी भूला दिया गया है।यह समझा जाने लगा है कि सिद्धान्ताकौमुदी महाभाष्य का संक्षिप्त किन्तु विशदसार है। इसी हेतु यह उक्ति प्रचलित है-

कौमुदी यदिकण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः।

कौमुदी यद्यकण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः॥

भट्टोजिदीक्षित ने काशिका, न्यास एवं पदमञ्जरी आदि सूत्रक्रमानुसारिणी व्याख्याओं तथा प्रक्रियाकौमुदी और उसकी टीकाओं के मतों की समीक्षा करते हुए प्रक्रिया-पद्धति के अनुसार पाणिनीय व्याकरण का सर्वांगीण रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।